1. बीरबहूटी PART 1 (बीरबहूटियों को खोजना)

(बादल बहुत बरस लिए थे । फिर भी बहुत सारा पानी उनमें बचा हुआ था । ------- स्टेशनरी की दुकानवाले ड्रॉपर से पैन में स्याही भरते थे ।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. बादल बरसना – वर्षा होना 2. बहुत सारा पानी बादलों में बचा हुआ था – आगे भी वर्षा होगी

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. बीरबहूटी कहानी के मुख्य पात्र कौन-कौन हैं?
   साहिल और बेला
2. कहानी का मुख्य विषय क्या है?
   साहिल और बेला की अनुपम दोस्ती
3. यहाँ किस मौसम का चित्रण हुआ है?
   बरसात के मौसम का
4. बहुत सारा पानी उनमें बचा हुआ था । किनमें?
   बादलों में
5. अभी-अभी हुई बारिश का वर्णन कहानीकार ने कैसे किया है?
   मेघों की छायाओं में गीली हवाएँ इधर-उधर घूम रही थीं । पेडों की तने अभी भी गीले थे । मूँगफलियों के हरे खेतों में पीले फूल अभी भी गीले थे । खेतों में छोटा-छोटा बाजरा उगा था । बाजरे की लंबी पतले पातों में पानी बूँदें अटकी हुई थीं ।
6. उन्हें बीरबहूटियों से मिलना होता था । किन्हें?
   साहिल और बेला को
7. बेला किसके साथ बीरबहूटियाँ को देखने गई ?
   साहिल के
8. साहिल और बेला स्कूल केलिए घर से कुछ समय पहले निकल आते थे । क्यों?
   बीरबहूटियों से मिलने केलिए
9. बीरबहूटियाँ कहाँ पाए जाते थे ?
   कस्बे से सटे खेतों में
10. दोनों कब और कहाँ बीरबहूटियों को खोजते थे?
    बारिश के मौसम में सुबह स्कूल जाते समय, कस्बे से सटे खेतों में
11. बेला और साहिल बीरबहूटियों को कैसे खोजते थे?
    एक दूसरे के बहुत नज़दीक रहकर, बिलकुल सटकर, गीली ज़मीन पर बैठकर
12. बीरबहूटियों की विशेषताएँ क्या-क्या थीं?
    बीरबहूटियाँ सुर्ख, मुलायम, गदबदी और धरती पर चलती फिरती खून की बूँदें जैसी थीं ।
13. दोनों किस गाँव के रहनेवाले हैं?
    फुलेरा गाँव के
14. फुलेरा जंक्शन की विशेषता क्या है?
    सवारी गाडियों और मालगाडियों से सदा भरा रहता है ।
15. साहिल और बेला बडे दोस्त हैं । इसकी सूचना देनेवाला एक वाक्य चुनकर लिखें ।
    वे एक दूसरे के बहुत नज़दीक रहकर, बल्कि कहना चाहिए बिलकुल सटकर बीरबहूटियाँ खोजते थे ।
16. हमें कैसे मालूम है कि वे स्कूल जा रहे हैं?
    उनकी पीठ पर स्कूल के बस्ते लदे होते थे और सुबह ही था ।
17. चलती बीरबहूटियों की तुलना किसके साथ किया है?
    खून की बूँदों के साथ
18. बीरबहूटियों के रंग के बारे में साहिल बेला से क्या कहता है?
    बीरबहूटियों का रंग बेला के रिबन के जैसा लाल है ।
19. किसको पैन में स्याही भरवानी है ? और कहाँ से भरवानी है ?
    साहिल को, दुकान से

SREEJITH P. KOVOOR VARKALA SCRIPS

20. मित्र के नाम साहिल का पत्र (बीरबहूटी कहानी के बारे में)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए यह पत्र भेज रहा हूँ ।

मुझे हिंदी अध्यापक जी ने बीरबहूटी नामक कहानी पढाई । पाँचवीं कक्षा के दो छात्रों की सच्ची मित्रता की कहानी । वह एक मर्मस्पर्शी कहानी है । इस कहानी के पात्र साहिल और बेला के जैसे हम दोनों सच्चे मित्र हैं । यह कहानी तुम्हें पढने केलिए दूँगा ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है? तुम कब यहाँ आओगे? तुम्हारे परिवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

21. पटकथा (बीरबहूटियों को खोजना)

स्थान – कस्बे से सटा खेत ।

समय – सुबह 9 बजे ।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है, पीठ पर बस्ता है । चेहरे पर खुशी है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहना है, पीठ पर बस्ता है । चेहरे पर खुशी है ।

दृश्य का विवरण – दोनों बच्चे, स्कूल में जाते समय कस्बे से सटे खेतों में बीरबहूटियों को खोजने आए हैं ।

संवाद -

बेला – देखो साहिल, यहाँ कितनी बीरबहूटियाँ हैं !

साहिल – हाँ, मैंने देखा । इसका रंग तुम्हारे रिबन के जैसा लाल है ।

बेला - ठीक है । ये कितने सुर्ख, मुलायम और गदबदी हैं! धरती पर चलती फिरती खून की बूँदें जैसी ... ।

साहिल – तुमने कुछ सुना बेला?

बेला - हाँ सुना, स्कूल में पहली घंटी लग गई है । तो हम जाएँ, बहुत देर लगी है ।

साहिल – लेकिन मुझे दुकान से पैन में स्याही भी भरवानी है ।

बेला - तू क्या बोलता है यार? देर होकर कहीं माटसाब के आगे हो जाए तो?

साहिल – नहीं बेला, स्कूल के नज़दीक के दूकान से ही भरवानी है ।

बेला - ठीक है साहिल । तो जल्दी चलें ।

(खेत की ज़मीन से उठकर दोनों बस्ते और वर्दी ठीक करके दुकान की ओर जाने लगते हैं ।)

22. वार्तालाप को आगे बढाएँ ।

साहिल - तुमने कुछ सुना बेला?

बेला - हाँ सुना । पहली घंटी लग गई है ।

साहिल - पहली घंटी किसकी है?

बेला - हिंदी की, तूने गृहकार्य पूरा किया है क्या?

साहिल - हाँ, लेकिन मुझे दुकान से पैन में स्याही भी भरवानी है ।

बेला - तू क्या बोलता है यार? देर होकर कहीं माटसाब के आगे हो जाया तो?

साहिल - ऐसा नहीं होगा यार, स्कूल के नज़दीक के दुकान से ही भरवानी है ।

बेला - क्या, कलम में स्याही बिलकुल नहीं है?

साहिल - कुछ स्याही थी, पर मैंने उसे ज़मीन पर छिडक दिया ।

बेला - ऐसा क्यों किया तूने?

साहिल - नई स्याही भरवाने केलिए पैन को खाली किया ।

बेला - दुकान में स्याही नहीं है तो?

साहिल - दुकान में स्याही ज़रूर होगा ।

बेला - तो हम जल्दी चलें ।

साहिल - ठीक है, बेला ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRIPS

23. टिप्पणी – सच्ची मित्रता

जीवन में दोस्ती का स्थान महत्वपूर्ण है। दो व्यक्तियों के बीच का आत्मसंबंध दोस्ती का आधार है। एक कहावत है यदि आपका मित्र अच्छा है तो आपको दर्पण की कोई आवश्यकता नहीं है। दोस्तों को चुनते समय हमें बहुत सतर्क रहना चाहिए। क्योंकि कुछ लोगों की मित्रता सच्ची नहीं होती। असली दोस्ती में एक दूसरे को पूर्ण रूप से जानता है, अपनी बातें बिना कोई हिचक से दूसरे से बाँटते हैं। सच्चा मित्र मिलना बडे सौभाग्य की बात होती है। सच्चा मित्र किसी भी आपत्ति में अपने मित्र को छोडकर नहीं जाता। वे सुख में हो या दुख में साथ रहते हैं। सच्ची मित्रता में जाति, धर्म आदि किसी भी भेदभाव की भावना नहीं होती। सच्चे मित्रों से अलग होना बहुत दुखदायक होता है। समाज में जीने केलिए अच्छी दोस्ती बहुत सहायक होता है।

24. साहिल की डायरी (बीरबहूटी की खोज)

तारीख : ....

स्कूल केलिए निकला। बेला के साथ। खेत गया। बस्ते पीठ पर लदे थे। ज़मीन पर बैठ गए। खेत में बीरबहूटियों को खोजने लगे। कुछ दिखाई भी दिए। सुर्ख, मुलायम, गदबदी बीरबहूटियाँ। धरती पर चलती – फिरती खून की प्यारी – प्यारी बूँदें। स्कूल की पहली घंटी लग गई। मुझे पैन में स्याही भरवानी थी। दुकान की ओर चले।

25. बेला की डायरी (बीरबहूटी की खोज)

तारीख : ....

स्कूल केलिए निकली। साहिल के साथ। खेत गई। बस्ते पीठ पर लदे थे। ज़मीन पर बैठ गए। खेत में बीरबहूटियों को खोजने लगे। कुछ दिखाई भी दिए। सुर्ख, मुलायम, गदबदी बीरबहूटियाँ। धरती पर चलती – फिरती खून की प्यारी - प्यारी बूँदें। स्कूल की पहली घंटी लग गई। साहिल को पैन में स्याही भरवानी थी। दुकान की ओर चले।

26. पोस्टर – कहानी का नाटकीकरण

जी.एच.एस.एस, कोल्लम
मशहूर कथाकार प्रभात की
पाँचवीं कक्षा के दो छात्रों की
सच्ची मित्रता की कहानी
बीरबहूटी
एकांकी के रूप में
आयोजन – हिंदी मंच

2019 जून 19 बुधवार को
सुबह 10 बजे स्कूल सभाभवन में

रचना - नवीन, दसवीं कक्षा
निदेशन - श्री. वरुण, हिंदी अध्यापक
प्रस्तुति - छात्र-छात्राएँ, दसवीं कक्षा
आइए... देखिए... मज़ा लूटिए...
सबका स्वागत

27. मित्र के नाम साहिल का पत्र (बीरबहूटियों की विशेषताएँ)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए पत्र भेज रहा हूँ।

हमारे इलाके में अब बारिश का मौसम चल रहा है। कस्बे से सटे सारे खेत बीरबहूटियों से भर गए हैं। स्कूल में आते-जाते समय मैं अपनी सहेली बेला के साथ मिलकर उन्हें खोजते हैं। तुमने कभी सुना है बीरबहूटियों के बारे में ? ये बहुत सुर्ख, मुलायम और गदबदी हैं। उन्हें देखकर धरती पर चलती-फिरती खून की प्यारी-प्यारी बूँदें जैसे लगती हैं। सचमुच उन्हें इस तरह लाल रिबन जैसे कतार में खडे होते देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। उन्हें खोजते रहने पर समय काट जाने का कोई अंदाज़ नहीं होगा। रविवार की छुट्टी में तुम यहाँ आना, हम साथ मिलकर उन्हें खोज लेंगे। तब तुम्हें पता चलेगा कि ये कितने मनमोहक हैं।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? तुम्हारे परिवालों से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता।

PART 2 (पैन में स्याही भरवाने दुकान जाना)

(पैन में कुछ स्याही बची थी, उसे साहिल ने ज़मीन पर छिडक दिया । --------- साहिल भी कहता, " बहन जी पानी पीने चला जाऊँ ? ")

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. कॉपी में काम करना – नोटबुक में लिखना
2. बुरे मन से बताना – असंतृप्त होकर बताना
3. बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना - सोच विचार करके काम लेना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. बेला और साहिल दुकान क्यों पहुँचे?
   पैन में नई स्याही भरवाने केलिए
2. दुकान पहुँचने के पहले साहिल ने क्या किया ?
   पैन में बची स्याही को ज़मीन पर छिडक दिया
3. ' अब तो स्याही कल ही मिल पाएगी ।'- दुकानदार ने ऐसा क्यों कहा?
   दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी ।
4. किसने पैन में बची स्याही को ज़मीन पर छिडक दिया । क्यों?
   साहिल ने, क्योंकि वह बेला के साथ पैन में स्याही भरवाने केलिए दुकान जा रहा था । इसलिए उसने स्याही को ज़मीन पर छिडक दिया था ।
5. ' पैन में नई स्याही भरवाने केलिए साहिल और बेला दुकान पहुँचे । पर उन्हें निराशा लौटना पडा ।'- क्यों ?
   दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी । इसलिए उन्हें निराश लौटना पडा ।
6. साहिल अपनी कलम में स्याही क्यों नहीं भर सका?
   दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी । इसलिए साहिल पैन में स्याही भर नहीं सका ।
7. पैन में कुछ स्याही बची थी, उसे साहिल ने ज़मीन पर छिडक दिया । ऐसा करना उचित है ? अपना मत प्रकट करें ।
   ऐसा करना उचित नहीं है । अगर दुकान जाने के बाद वहाँ स्याही है, यह निश्चित कर ऐसा करें तो परवाह नहीं होता ।
8. बेला और साहिल कौन-सी कक्षा में पढते थे?
   पाँचवीं कक्षा में
9. साहिल और बेला को क्या-क्या समानताएँ थीं?
   साहिल और बेला पाँचवीं कक्षा की एक ही सेक्शन में पढते हैं । साहिल जो कार्य करता था वही बेला भी करती थी ।
10. ' बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ' - दुकानदार ने ऐसा क्यों कहा?
    साहिल ने पैन में नई स्याही भरवाने की इच्छा से उसमें बची स्याही को जमीन पर छिडक दिया । दुकान पहुँचने पर वहाँ स्याही नहीं थी । तब दुकानदार ने साहिल से ऐसा कहा । कहने का मतलब है, किसी वस्तु को मिलने की प्रतीक्षा में हमारे पास के वस्तु को छोडना मूर्खता है । बिना सोच विचार करके कुछ नहीं करना चाहिए ।

11. बेला की डायरी (पैन में स्याही)

तारीख : .....

खेत में बीरबहूटियों को देख रही थी । साहिल भी थी । स्कूल की पहली घंटी बजी । साहिल के पैन में थोडी स्याही थी उसने उसे ज़मीन पर छिडक दिया । स्याही भरवाने दुकान गए । दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी । बहुत निराश हुए । ' बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ' दुकानदार का उपदेश भी सुना । कितना नटखट है यह साहिल ।

12. साहिल की डायरी (पैन में स्याही)

तारीख : .....

खेत में बीरबहूटियों को देख रहा था । बेला भी थी । स्कूल की पहली घंटी बजी । पैन में थोडी स्याही थी उसे ज़मीन पर छिडक दिया । स्याही भरवाने दुकान गए । दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी । बहुत निराश हुए । ' बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ' दुकानदार का उपदेश भी सुना । ठीक है, बिना विचारे कुछ भी नहीं करना है ।

13. पटकथा- (पैन में स्याही भरवाने द्वकान में)

स्थान - गाँव की स्टेशनरी की दुकान ।
समय - सुबह 10 बजे ।
पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है, पीठ पर बस्ता है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहना है, पीठ पर बस्ता है ।
3. दुकानदार, करीब 50 साल के आदमी, धोती और कुर्ता पहने हैं ।
दृश्य का विवरण - बेला और साहिल पैन में स्याही भरवाने केलिए दुकान के पास खडे हैं ।

SREEJITH P, KOVOOR VARKALA, SCR145

संवाद -

दुकानदार - अरे बच्चे, क्या चाहिए?

बेला - भैया, एक पैन स्याही भर दो ।

दुकानदार - अरे, स्याही की बोतल अभी-अभी खाली गई है । अब तो कल ही मिल पाएगी ।

साहिल - बाप रे ! अब मैं क्या करूँ?

दुकानदार - पैन में थोडी भी स्याही नहीं है ।

बेला - नहीं भैया । पैन में थोडी स्याही थी । इसने तो उसे ज़मीन पर छिडक दिया ।

दुकानदार - (हँसते हुए) अरे बच्चो, बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ।

साहिल - हाँ गलती हुई ।

दुकानदार - कौन - सी कक्षा में पढते हो?

साहिल - (बुरे मन से) पाँचवीं में ।

दुकानदार - दोनों?

बेला - (खुशी से) हाँ, हम दोनों एक ही सेक्शन में पढते हैं । स्कूल का समय हो गया अंकिल, हम चलते हैं ।

दुकानदार - अच्छा । तो कल आओ बच्चो, स्याही ज़रूर मिलेगी ।

बेला - ठीक है भैया ।

(दोनों बच्चे निराश होकर दुकान से बाहर आते हैं ।)

14. स्याही न मिलने पर साहिल निराश हुआ । जाते वक्त साहिल और बेला के बीच का वार्तालाप

बेला - साहिल अब हम क्या करेंगे?

साहिल - चलो, किसीसे उधार लेंगे ।

बेला - काश ! तूने पैन में बची स्याही को न छिडाए तो आज कुछ लिख सकता था न ...?

साहिल - क्या करूँ यार? दुकान जा रहा था न, इसलिए ...

बेला - दुकानदार का कहना याद है न?

साहिल - हाँ याद है । आगे कभी मैं ऐसा नहीं करूँगा । आज का पहला पीरियड किसका है?

बेला - हिंदी की, तूने गृहकार्य पूरा किया है क्या?

साहिल - हाँ किया ।

बेला - तो जल्दी चलो, अध्यापक क्लास में घुसने से पहले जाकर किसीसे पैन पूछ लेना ।

साहिल - ठीक है यार ।

15. टिप्पणी – साहिल और बेला की दोस्ती

साहिल और बेला प्रभात की कहानी बीरबहूटी के मुख्य पात्र हैं । वे दोनों फुलेरा गाँव के स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढनेवाले छात्र हैं । वे एक साथ स्कूल आते-जाते हैं । बीरबहूटियों को खोजने केलिए और खेलने केलिए एक साथ निकलते हैं । दोनों एक ही क्लास में पढते हैं, एक ही बेंच पर पास-पास बैठते हैं । कक्षा में साहिल जो करता है वही बेला भी करती है । एक साथ कॉपी लिखते हैं । किताब पढते तो दोनों किताब पढते, पाठ भी एक ही पढते । एक साथ पानी पीने चले जाते हैं । वे पास-पास रहते हैं । दोनों अच्छे दोस्त हैं । एक का दुख दूसरे का भी है । सुरेंदर जी माटसाब बेला के बालों में पंजा फँसाने पर साहिल दुखी हो जाता है । छत से गिरकर बेला के सिर पर चोट लगने पर भी । साहिल की पिंडली में कील लग जाने पर बेला भी बहुत दुखी हो जाती है । पाँचवीं का रिज़ल्ट आया तो छठी कक्षा में दोनों अलग-अलग स्कूलों में पढने जाने की बात सोचकर बेला को रुलाई आई तो साहिल की आँखें भी लाल हो गईं । दोनों आपस में सांत्वना देते हैं । इस प्रकार दोनों की अनुपम दोस्ती हम देख सकते हैं ।

16. टिप्पणी – अपनी दोस्ती

बचपन में मेरा दिली दोस्त था मनु । मनु के माँ-बाप गरीब थे, पर वह अच्छी तरह पढता था । सातवीं कक्षा तक हम दोनों एक ही कक्षा में पढते थे । क्लास में हम पास-पास बैठते थे । मैं पढाई में थोडा पिछडा था, इसलिए कभी-कभी पढाई में वह मेरी सहायता करता था । वह अकसर मेरा घर आता था, मैं उसके घर में भी । छुट्टी के दिन हम अन्य बच्चों के साथ पास के मैदान में खेलने जाते थे । खेलने के बाद हम वहाँ के तालाब में नहाने जाते थे । एक दिन हम स्कूल से लौट रहे थे, तब पैर फिसलकर सडक पर गिरने से पाँव में चोट लगी । तब वह मुझे अस्पताल ले गया । सातवीं पास होने पर मैं दूर के स्कूल में भर्ती कराया गया । वह गाँव में ही रहा । फिर हम मिल न पाये । उसकी यादें, अब भी मन में हैं ।

SREEJITH P, KOVOOR VARKALA, SGRHS

PART 3 (बेला के साथ सुरेंदर माटसाब का बुरा व्यवहार)

(गणित के माटसाब सुरेंदर जी का पीरीयड खेल घंटी के बाद आता था। ---------- जब वह उसके पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. नज़र मिलाना - मुँह की ओर देखना/ चेहरे पर देखना 2. शर्मिंदा महसूस करना - लज्जित होना/ अपमानित होना

3. मन खराब होना – मन उदास होना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. गणित के माटसाब सुरेंदर जी से बच्चे क्यों डरते थे?

कॉपी जाँचते समय उसमें ज़रा सी गलती होने पर वे बच्चों को इधर उधर फेंक देते थे या झापड मारने लगते थे ।

2. खेल घंटी बंद होने से दो मिनट पहले ही बच्चे अपनी–अपनी जगहों पर आकर बैठ जाते थे। क्यों?

खेल घंटी के बाद का पीरियड सुरेंदर माटसाब का था।

3. ' गणित के माटसाब छात्रों को ज़रा-सी गलती पर इधर- उधर फेंक देते थे ।' - उसपर अपना विचार लिखें ।

छात्रों से अगर कोई गलती हुई तो प्यार भरी बातें कहकर उन्हें सुधारना चाहिए। गलती सुधारने में गुस्सा करना कभी ठीक नहीं है। ऐसा करने पर उस अध्यापक के प्रति हमेशा उनके मन में भय रहेगा। यह एक अच्छे अध्यापक केलिए लायक नहीं। शरारती बच्चों को भी प्यार भरी व्यवहार करके बदलना चाहिए।

4. माटसाब ने बेला के बालों में पंजा क्यों फँसाया था?

उसकी कॉपी में गलती पाकर

5. माटसाब ने बेला को क्यों छोड दिया?

कॉपी में गलती न होने से

6. साहिल क्यों बुरी तरह डर गया?

बेला के भयभीत चेहरे को देखकर

7. माटसाब ने बेला के साथ कैसा व्यवहार किया था ?

माटसाब ने कॉपी में गलती पाकर बेला के बालों में पंजा फँसाया। पर कॉपी में गलती न होने से गुस्से में कॉपी को उसके बैठने की जगह पर फेंकते हुए वहाँ जाकर बैठने को कहा।

8. वह साहिल के सामने खुद को शर्मिंदा महसूस कर रही थी। इसमें **वह** शब्द किसके बदले प्रयुक्त है ?

बेला

9. उसकी नज़र में बेला बहुत अच्छी लडकी है। किसकी नज़र में ?

साहिल की

10. बेला खुद को शर्मिंदा महसूस कर रही थी। क्यों?

क्योंकि साहिल के सामने माटसाब ने बेला के बालों में पंजा फँसाया।

11. बेला साहिल से नज़र नहीं मिला पाई। क्यों?

क्योंकि उसे अच्छी लडकी माननेवाले साहिल के सामने माटसाब ने अकारण बालों में पंजा फँसाकर उसको अपमानित किया।

12. ' बेला खुद को शर्मिंदा महसूस कर रही थी।'- इसके क्या–क्या कारण हैं?

बेला जानती थी अपनी दिली दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी लडकी है। उसके सामने बेला अपमानित होना नहीं चाहती थी। लेकिन माटसाब का व्यवहार साहिल की उपस्थिति में थी। इसलिए उसे शरम आया।

13.' माटसाब चाहे मुझे पीट लेते मगर साहिल के सामने नहीं ।'- बेला ऐसा क्यों सोचती है?

बेला जानती थी कि अपने दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी है। साहिल के सामने वह अपमानित होना नहीं चाहती थी। इसलिए वह ऐसा सोचती है।

14. ' बेला का मन बहुत खराब हो गया ।'- क्यों?

साहिल के सामने गणित के माटसाब ने गलती से बेला के बालों में पंजा फँसाया। उसे अच्छी माननेवाले साहिल के सामने यह व्यवहार होने से बेला का मन बहुत खराब हो गया।

15. साहिल के प्रति बेला के मन में कौन-सा विचार उठ जाता है?

अब तक साहिल बेला को एक अच्छी लडकी मानता था। उसके सामने अपमानित होने से बेला के मन में उसके प्रति ऐसे विचार आए होंगे कि वह ज़रूर उसे बुरा माना होगा। साहिल भी बहुत डर गया होगा। उससे कैसे नज़र मिलाए? कैसे बात करे? उसके पास कैसे जाकर बैठे?

16. जब वह उसके पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई। क्यों?

बेला जानती थी अपनी दिल दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी लडकी है। उसके सामने बेला अपमानित होना नहीं चाहती थी। लेकिन माटसाब का व्यवहार साहिल की उपस्थिति में थी। इस कारण उसे शरम आया। इसलिए बेला साहिल के पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई।

17. चरित्रगत विशेषताएँ - गणित के माटसाब सुरेंदरजी का

सुरेदर माटसाब बेला और साहिल के गणित अध्यापक थे । स्कूल के सभी बच्चे उनका नाम सुनने पर या दूर से देखने पर काँपना शुरू करते थे । इसलिए घंटी बजने के दो मिनट पहले ही अपने स्थान पर आकर बैठते थे । वे बीच बीच में गणित की कॉपी जाँचते थे । ज़रा-सी गलती पर भी झापड मारना, बालों में पंजा फँसाना, कॉपी दूर फेंकना आदि उनकी बुरी आदतें थीं । भयभीत होकर छात्र क्लास में साँस पकडकर बैठते थे । छात्रों के अपमान करने में उनको तनिक भी हिचक नहीं थी । बच्चों की गलतियों को माफ करना उनकी बस की बात नहीं थी । बच्चे उनसे बिलकुल प्यार नहीं करते थे ।

18. रपट (बेला के साथ माटसाब का व्यवहार)

छोटी लडकी के साथ माटसाब की क्रूरता

स्थान : .... फुलेरा गाँव के स्कूल की पाँचवीं कक्षा में पढती बेला नामक दस साल की लडकी के साथ गणित के माटसाब सुरेंदर जी ने ऐसी क्रूरता दिखाई । कॉपी जाँचते वक्त उसमें गलती पाकर माटसाब ने बेला के बालों मे पंजा फँसाकर उसे फेंकने लगा । लेकिन सच में वह गलती न होने से उसे छोड दिया । उसे एक अच्छी लडकी माननेवाले अपने मित्रों के सामने हुए यह अपमान वह सह न सकती थी । छोटे बच्चों के साथ ऐसा क्रूर व्यवहार एक अध्यापक केलिए लायक नहीं है । कहा जाता है कि पूरे स्कूल के छात्र उनसे डरते हैं । कॉपी में ज़रा -सी गलती होने पर बच्चों को इधर उधर फेंक देना या झापड मारना उनकी आदत थी । बेला के पिता ने पुलिस थाने में शिकायत दर्ज़ की है ।

19. माटसाब की डायरी (बेला के साथ किए व्यवहार)

तारीख : ....

आज मुझसे एक छोटी-सी गलती हो गई । आज कक्षा में कॉपी जाँच रहा था । गुस्से आकर बेला नामक की एक लडकी के बालों में पंजा फँसाया । मुझे लगा कि उसने जो लिखा था वह गलत है । पर सच में वह गलती न होने से मैंने उसे छोड दिया । पुस्तक अपनी बैठने की जगह पर फेंककर वहीं जाकर बैठने को कहा । वह बहुत डरी हुई थी । पूरे छात्रों के सामने वह लज्जित हुई थी । दुख के साथ वह अपनी जगह पर बैठ गई । पता नहीं, वह कैसे छात्रों का सामना किया होगा ? बाद में मुझे लगा कि ऐसा नहीं करना चाहिए था, वो भी एक अध्यापक होकर । पर अब पश्चताने से कोई फायदा नहीं ।

20. साहिल की डायरी (माटसाब का व्यवहार)

तारीख : ....

आज मेरेलिए कैसा दिन था, बता नहीं सकता।गणित के माटसाब क्लास में आए । हम सब भयभीत रहे । वे कॉपी जाँचने लगे । अचानक उन्होंने कॉपी में कोई गलती पाकर बेला के बालों में पंजा फँसाया । गलती न होने से उसे छोड दिया । उसकी भयभीत चेहरा देखकर मैं भी बुरी तरह डर गया । बेला के पाँव काँप रहे थे । मुझे लगा कि वह अभी गिर जाएगी । उसे बहुत शरम आया था । मेरे पास आकर बैठने पर वह मुझे नज़र नहीं मिला न सकी । पूरे दिन वह उदास रही । यह बुरा दिन मैं कैसे भूलूँ?

21. बेला की डायरी - गणित के माटसाब से हुए बुरे व्यवहार के बारे में

तारीख : ....

आज मुझे बहुत दुख का दिन था । गणित के माटसाब सुरेंदर जी मेरी कॉपी जाँचते वक्त उसमें गलती पाकर उन्होंने मेरे बालों मे पंजा फँसाया । लेकिन वह गलती न होने पर उन्होंने मुझे छोड दिया । मैं बहुत डर गयी थी । मेरे हाथ पैर काँप रहे थे । मुझे भयभीत होते देखकर साहिल भी बुरी तरह डर गया । माटसाब ने कॉपी मेरे बैठने की जगह पर फेंककर मुझे वहाँ जाकर बैठने को कहा । मुझे बहुत शरम आया । इसलिए मैं साहिल से नजर नहीं मिला पाई । क्या करूँ ? अगर कॉपी में गलती होती तो मेरी क्या हालत होती ? सोच भी नहीं सकती । घर पहुँचने पर भी मेरा मन दुख से भरा था । आज का यह बुरा दिन मैं जिंदगी भर याद रखूँगी ।

22. सहेली के नाम बेला का पत्र - क्लास में हुए बुरे अनुभव का ज़िक्र करते हुए

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए यह पत्र भेजती हूँ ।

आज स्कूल में एक घटना हुई । तीसरी पिरीयड गणित का था । गणित के माटसाब का नाम सुनते ही हम काँप जाते थे । आज वे मेरी कॉपी जाँच रहे थे । तभी उन्होंने मेरे बालों में पंजा फँसाया । लेकिन कॉपी में कोई गलती नहीं थी । उन्होंने मुझे छोड दिया । मैं डर से काँप रही थी । उन्होंने कॉपी मेरी सीट पर फेंक दी । फिर अपनी जगह पर बैठने का आदेश दिया । तुम जानती हो, वे कितने क्रूर हैं । उनकी क्लास हमें बहुत भयानक लगता है । वहाँ तुम्हें सुरेंदर जी जैसा कोई अध्यापक है क्या?

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

23. वार्तालाप – साहिल और बेला (माटसाब का व्यवहार)

साहिल - बेला, तुम अभी दुखी है क्या?

बेला - फिर मैं क्या करूँ?

साहिल - अरे, तुम जानती हो न माटसाब ऐसा ही हैं।

बेला - मैंने कोई गलती नहीं की थी। फिर भी उन्होंने मेरे बालों में पंजा फँसाया।

साहिल - हाँ, वे भी जानते थे। इसलिए तुम्हें छोड दिया।

बेला - मैं सचमुच डर गई थी।

साहिल - हाँ, मैं भी डर गया था।

बेला - मेरे पाँव काँप रहे थे। मुझे लगा कि मैं गिर जाऊँगी।

साहिल - मुझे भी एसा लगा।

बेला - मैं बहुत लज्जित हूँ ... सबको मुँह कैसे दिखाऊँ? अकारण मुझे पीटने केलिए वे एक सोरी तो बोल सकते थे ... पर।

साहिल - तुम इस घटना को भूलो।

बेला - पर ... मैं दुख सह न पाती। घर जाकर माँ से यह बात ज़रूर बताऊँगी।

साहिल - ज़रूर बताना। अब खुशी से घर जाओ।

बेला - ठीक है साहिल, मैं कोशिश करूँगी।

24. बेला और माँ के बीच हुए वार्तालाप - घर पहुँचने पर माटसाब के व्यवहार के बारे में

माँ - क्या हुआ बेटी, बहुत परेशान दिखती हो?

बेला - क्या कहूँ माँ, आज स्कूल में एक घटना हुई।

माँ - किसीके साथ झगडा हुआ होगा?

बेला - नहीं। गणित के माटसाब ने मेरे बालों में पंजा फँसाया।

माँ - सुरेंदर जी ! तुमने जरूर कोई गलती की होगी।

बेला - नहीं माँ। मैंने जो लिखा था वह ठीक ही था।

माँ - छोड दो। मास्टर जी है न?

बेला - लेकिन साहिल के सामने वह अपमान मैं सह न सकी।

माँ - कोई बात नहीं। वह तुम्हें अच्छी तरह समझता है।

25. पटकथा (सुरेंदर माटसाब की क्लास में)

स्थान – कक्षा का भीतरी भाग।

समय – दोपहर के साढे बारह बजे।

पात्र – साहिल और बेला दोनों 11 साल के, स्कूली यूनीफॉर्म पहने हैं।
सुरेंदर जी, गणित के माटसाब, करीब 50 साल के, धोती और कमीज़ पहने हैं।

घटना का विवरण – सभी बच्चे चुपचाप बैठे हैं। गणित के माटसाब सुरेंदर जी का प्रवेश।

संवाद –

साहिल – (डरते हुए) बेला, सुरेंदर जी माटसाब आ रहे हैं।

बेला – तूने गृहकार्य पूरा किया?

साहिल - हाँ।

माटसाब - (सभी छात्रों से) सब मेरे पास आकर अपना कॉपी दिखाना। (एक एक करके उनके पास आकर अपना कॉपी दिखाता है।)

माटसाब – (बेला को देखकर) बेला, कॉपी लेकर जल्दी आओ इधर।

बेला - आती हूँ सार।

माटसाब – (क्रोध से) तूने यह क्या लिखा है अपनी कॉपी में?

बेला - (डरती हुई) जी मैं ...

माटसाब – (गुस्से में, कॉपी उसके बैठने की जगह फेंकते हुए) जा बैठ अपनी जगह।

बेला - हे भगवान, बच गया। अब मैं साहिल से कैसे नज़र मिलाऊँ?
(उदास होकर वह मुँह नीचा करके चुपचाप साहिल के पास जाकर बैठती है।)

SREEJITH R. KOVOOR VARKALA, SCRHS

PART 4 (दीपावली के बाद स्कूल खुलना, गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेलना)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. परेशान होना – व्याकुल होना/ दुखित होना 2. ज़िद करना – हठ करना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. बेला के सिर पर चोट कैसे लगी थी?
   छत से गिर जाने के कारण
2. बेला के सिर पर सफेद पट्टी क्यों बाँधी थी ?
   क्योंकि छत से गिर जाने के कारण उसके सिर पर चोट लगी थी ।
3. बेला और साहिल गाँधी चौक क्यों जाते थे?
   लंगडी टाँग खेलने केलिए
4. बच्चे बेला को सुलताना डाकू कहकर चिढाने का कारण क्या है?
   छत से गिरने के कारण बेला के सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी ।
5. बेला को बच्चे क्यों चिढा रहे थे?
   बेला के सिर पर चोट लगने के कारण सफेद पट्टी बाँधी थी । इसलिए बेला को बच्चे चिढा रहे थे ।
6. साहिल के परेशान होने का कारण क्या था?
   दीपावली की छुट्टियों के बाद स्कूल खुला तो बेला के सिर पर पट्टी बाँधी थी । कोई उसे सफेद पट्टी कह रहा था तो कोई सुल्ताना डाकू तो कोई कुछ और कहकर चिढा रहा था । बेला की यह हालत देखकर साहिल परेशान हो गया ।
7. बेला कहाँ जाने केलिए ज़िद की ? क्यों?
   गाँधी चौक में जाने की, क्योंकि वह खेल घंटी में गाँधी चौक में लंगडी टांग खेलना चाहती थी ।
8. ‘ नहीं खेलेंगे । तेरे सिर में फिर से लग जाएगी तो ’- यहाँ साहिल का कौन–सा मनोभाव स्पष्ट होता है?
   बेला से उसकी अंतरंग मित्रता का ।
9. साहिल ने बेला से क्यों कहा कि “ नहीं खेलेंगे? ”
   बेला के सिर पर चोट लगी थी । खेलने पर फिर चोट लगने की संभावना थी । इसलिए साहिल ने बेला से ऐसा कहा ।
10. ‘ गाँधीजी की मूर्ति ऐसी दिखाई पडती जैसे और सयय से कुछ अधिक मुस्करा रही हो ।‘- इसका कारण क्या होगा?
    अपने चारों ओर हँसते-खेलते बच्चों को देखकर
11. ‘ इन बच्चों को अपने चारों ओर खेलते देखकर गाँधीजी की मूर्ति ऐसी दिखाई पडती जैसे और सयय से कुछ अधिक मुस्करा रही हो । ‘
    - इसका मतलब क्या है?
    गाँधीजी बच्चों को बहुत प्यार करते थे । इसलिए बच्चे जब निष्कलंकता और प्यार भरी दोस्ती के साथ अपनी मूर्ति की चारों ओर खेलने लगे तो उसे अधिक प्रसन्नता हुई होगी ।

12. पटकथा - 4 (गाँधी चौक के लंगडी टाँग खेल)

स्थान – स्कूल का मैदान ।

समय – सुबह 10 बजे ।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहना है ।

दृश्य का विवरण– दीपावली के बाद स्कूल खुला तो बेला के सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी । यह देखकर साहिल उसकेपास आता है ।

संवाद -

साहिल - (परेशान होकर) तेरे सिर पर यह क्या हो गया बेला?

बेला - (हँसकर) छत से गिरकर चोट लग गयी ।

साहिल - यह कब हुआ?

बेला - बहुत दिन हो गए ।

साहिल - अब दर्द है क्या?

बेला - नहीं । आज खेल घंटी में हम गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेलेंगे ।

साहिल - नहीं खेलेंगे । तेरे सिर में फिर से चोट लग जाएगी तो …?

बेला - (ज़िद करते हुए) नहीं लगेगी ।

साहिल - तो ठीक है । अपनी मर्ज़ी ।

(दोनों खुशी से कक्षा में जाकर बैठते हैं ।)

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA SCR145

13. बेला की डायरी (गाँधी चौक का खेल)

तारीख : ....

आज का दिन मेरेलिए कैसा रहा, बता नहीं सकती । दीपावली की छुट्टी के बाद आज स्कूल गयी । सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी । यह देखकर लडके मुझे चिढाने लगे । यह देखकर साहिल मेरे पास आया । साहिल के आने से मैं उनके मज़ाक उठाने से बच गयी । साहिल परेशान होकर मुझसे पट्टी बँधवाने का कारण पूछा । मैंने उससे खेलघंटी में गाँधीचौक में लंगडी टाँग खेलने की ज़िद की । आखिर मेरी हठ के कारण अंत में उसने मान लिया । पूरे खेलघंटी हम लंगडी टाँग खेलते रहे । खेलते समय भी वह डरा हुआ था कि मुझे कुछ हो गया तो ... । पर ईश्वर की कृपा से ऐसा कुछ नहीं हुआ ।

14. साहिल की डायरी (गाँधी चौक का खेल)

तारीख : ....

आज का दिन मेरेलिए कैसा रहा, बता नहीं सकता । दीपावली की छुट्टियों के बाद स्कूल खुला । मैं सबेरे ही स्कूल पहुँचा । थोडी देर बाद बेला आई । उसके सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी । बच्चे उसकी हँसी उठाने लगे । मैं उसके पास गया । वह छत से गिर गई थी । बहुत दिन हो गए थे । देखकर मुझे बहुत दुख हुआ । बाद में वह हमारे साथ गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेली । मैं परेशान था यदि उसके सिर पर फिर से चोट लगी तो...। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ । पूरी खेल घंटी हम खुशी से खेलते रहे ।

15. साहिल का पत्र (गाँधी चौक का खेल)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ ।

दीपावली की छुट्टियों के बाद स्कूल खुला । मैं सबेरे ही स्कूल पहुँचा । थोडी देर बाद बेला आई । उसके सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी । बच्चे उसकी हँसी उठाने लगे । मैं उसके पास गया । वह छत से गिर गई थी । बहुत दिन हो गए थे । देखकर मुझे बहुत दुख हुआ । बाद में वह हमारे साथ गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेली । मैं परेशान था यदि उसके सिर पर फिर से चोट लगी तो...। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ । पूरी खेल घंटी हम खुशी से खेलते रहे ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है? तुम कब यहाँ आओगे? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

16. बेला की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक प्रभात की सुंदर कहानी बीरबहूटी का मुख्य पात्र है बेला नामक ग्यारह साल की लडकी । वह फुलेरा गाँव के स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढती है । उसका दोस्त है साहिल । दोनों अच्छे दोस्त हैं, वे एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं । दोनों एक ही कक्षा में पढते थे । साथ-साथ स्कूल आते-जाते हैं, रास्ते के खेत में बीरबहूटियों को खोजते हैं और खेल घंटी में गाँधी चौक में लंगडी टांग खेलते हैं । बाकी छात्रों के नज़र में बेला एक अच्छी लडकी है । एक दिन गणित के माटसाब ने कॉपी जाँचते समय उसमें गलती पाकर उसका अपमान करते तो वह बहुत उदास हो जाती है । पाँचवीं के रिज़ल्ट आने पर अगले साल बिछुड जाने के बात को लेकर दोनों दुखी हो जाते हैं । बेला में हम एक सरस स्वभाववाली, मित्रता निभानेवाली, स्वाभिमानी लडकी को देख सकते हैं ।

17. साहिल की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक प्रभात की सुंदर कहानी बीरबहूटी का मुख्य पात्र है साहिल नामक ग्यारह साल का लडका । वह फुलेरा गाँव के स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढता है । उसकी सहेली है बेला । दोनों अच्छे दोस्त हैं,वे एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं । दोनों एक ही कक्षा में पढते थे । साथ-साथ स्कूल आते-जाते हैं,रास्ते के खेत में बीरबहूटियों को खोजते हैं और खेल घंटी में गाँधी चौक में लंगडी टांग खेलते हैं । कॉपी जाँचते समय गणित के माटसाब बेला का अपमान करने पर वह दुखी हो जाता है । पाँचवीं के रिज़ल्ट आने पर अगले साल बिछुड जाने के बात को लेकर दोनों दुखी हो जाते हैं । साहिल में हम एक सरस स्वभाववाले, मित्रता निभानेवाले, स्वाभिमानी लडके को देख सकते हैं ।

SREEJITH R. KOVOOR VARKALA, SCRIUS

PART 5 (रविवार का दिन, साहिल पिंडली में चोट लगने अस्पताल में)

(रविवार का दिन था। ----------------- ये दोनों कहीं पर भी साथ ही दिखाई देते।)

1. साहिल को सरकारी अस्पताल में पट्टी बँधवाने केलिए क्यों ले जाया गया?

उसकी पिंडली में कील लगने से एक इंच गहरा गड्ढा हो गया था।

2. साहिल की पिंडली में चोट लगी। कैसे?

रविवार के दिन साहिल अपने घर में स्कूल पर चढकर नीम के पेड की डाली पकडकर झूम रहा था। तब टूटे स्टूल की एक कील उसकी पिंडली में लग गई। इस प्रकार उसकी पिंडली में चोट लगी।

3. बेला क्यों अस्पताल आई है?

सिर पर पट्टी बँधवाने केलिए

4. बेला की डायरी (अस्पताल में जाना, वहाँ साहिल को देखना)

तारीख : ....

आज मैं अपने पापा के साथ सरकार अस्पताल में पट्टी बँधवाने गयी थी। तब वहाँ कतार में खडे साहिल को देखा। वह अपनी पिंडली में पट्टी बँधवाने आया था। स्कूल की छुट्टी होने से वह अपने घर में नीम की डाली पकडकर झूमते वक्त स्कूल की एक कील उसकी पिंडली में लग गग गई। एक इंच गहरा गड्ढा हो गया था। उसे पैर पर बहुत दर्द हो रहा था। ठीक से पैर ज़मीन पर रख न सकता था। बहुत मुश्किल से खडा था। बेचारा, कितनी बुरी हालत है उसकी। पर मुझे तो एक बात पर हँसी तो आई, कितनी एकता है हममें। अब मेरे सिर पर पट्टी है तो उसकी पिंडली में।

5. साहिल की डायरी (अस्पताल जाना)

तारीख: ....

स्कूल की छुट्टी थी। मैं एक स्टूल पर चढकर नीम की डाली पकडकर झूम रहा था। अचानक टूटे स्टूल की एक कील मेरी पिंडली में लग गई। एक इंच का गहरा गड्ढा हो गया। माँ मुझे पट्टी बँधवाने सरकारी अस्पताल ले गई। वहाँ पर बेला को देखा। वह सिर पर पट्टी बँधवाने आई थी। उसके सिर पर पट्टी। मेरी पिंडली में। कितनी एकता है हममें ...

6. बेला का पत्र (अस्पताल में)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए यह पत्र भेज रही हूँ।

आज मैं अपने पापा के साथ सरकार अस्पताल में पट्टी बँधवाने गयी थी। तब वहाँ कतार में खडे साहिल को देखा। वह अपनी पिंडली में पट्टी बँधवाने आया था। स्कूल की छुट्टी होने से वह अपने घर में नीम की डाली पकडकर झूमते वक्त स्कूल की एक कील उसकी पिंडली में लग गग गई। एक इंच गहरा गड्ढा हो गया था। उसे पैर पर बहुत दर्द हो रहा था। ठीक से पैर ज़मीन पर रख न सकता था। बहुत मुश्किल से खडा था। बेचारा, कितनी बुरी हालत है उसकी। पर मुझे तो एक बात पर हँसी तो आई, कितनी एकता है हममें। अब मेरे सिर पर पट्टी है तो उसकी पिंडली में।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे हो रही है? तुम कब यहाँ आओगी? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में, तुम्हारा मित्र

नाम (हस्ताक्षर)

पता। नाम

7. वार्तालाप (अस्पताल में, साहिल और बेला के बीच)

साहिल - हाय बेला, यहाँ क्यों आई हो?

बेला - हाय साहिल, मैं तो सिर पर पट्टी बँधवाने आई है। क्या हुआ तुमको?

साहिल – मेरी पिंडली में चोट लग गई है।

बेला - कैसे?

साहिल – स्टूल पर चढकर नीम की डाली पकडकर झूलते वक्त स्टूल टूटने से एक कील मेरी पिंडली में लग गई।

बेला - डॉक्टर ने क्या कहा ?

साहिल – उन्होंने कहा घबराने की कोई बात नहीं। कुछ दिनों के बाद पट्टी खोलेंगे।

बेला - दर्द ज़्यादा है क्या?

साहिल – अब दर्द कुछ कम हुआ है।

बेला - अच्छा मैं जाती हूँ, नर्स बुला रही है। बाई।

साहिल – ठीक है बेला, बाई।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SOPIUS

PART 6 (पाँचवीं कक्षा का रिज़ल्ट आना, दोनों की बिछुडाई)

1. फुलेरा के स्कूल में कौन-सी कक्षा तक था ?
   पाँचवीं कक्षा तक
2. बेला और साहिल अब किस कक्षा में आ गए हैं ?
   छठी कक्षा में
3. अगले साल साहिल और बेला कहाँ पढेंगे?
   छठी कक्षा में साहिल अजमेर में पढेगा और बेला राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी ।
4. बेला और साहिल अब फुलेरा के स्कूल में नहीं पढ सकते । क्यों?
   उनका स्कूल पाँचवीं तक था । वे दोनों अब छठी में आ गए ।
5. साहिल और बेला के बिछुडन का कारण क्या है?
   फुलेरा गाँव का उनका स्कूल पाँचवीं तक ही था ।
6. बेला और साहिल का दोस्ती क्यों छूट जाती?
   क्योंकि दोनों आगे की पढाई केलिए अलग-अलग स्कूल जाते हैं ।
7. साहिल और बेला को दूसरे स्कूल क्यों जाना पडता है?
   साहिल और बेला फुलेरा के जिस स्कूल में पढते हैं वह पाँचवीं तक का है । इसलिए पाँचवीं पास हुए साहिल और बेला को आगे की पढाई केलिए दूसरे स्कूल में जाना पडता है ।
8. पाँचवीं कक्षा का रिज़ल्ट आने पर दोनों बच्चे बहुत दुखी थे ।- कारण क्या था?
   गाँव का स्कूल पाँचवीं तक का होने से उन्हें आगे की पढाई केलिए अलग अलग स्कूलों में पढना पडेगा ।

9. पटकथा (पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट आने पर)

स्थान – फुलेरा कस्बे की एक गली ।

समय – सुबह 11 बजे ।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, फ्रॉक पहनी है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, कुर्ता और पतलून पहना है ।

दृश्य का विवरण – दोनों पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट जानने के बाद दुखी मन से गली की एक पेड के नीचे खडे हैं ।

संवाद -

साहिल - तुमने हमारा रिज़ल्ट देखा?

बेला - हाँ देखा, हम दोनों छठी में आ गए हैं ।

साहिल - अगले साल तुम कहाँ पढोगी?

बेला - राजकीय कन्या पाठशाला में । और तुम?

साहिल - मुझे अगले साल अजमेर भेज देंगे । वहाँ एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा ।

बेला - क्यों साहिल?

साहिल - पता नहीं क्यों?

बेला - क्या अब तुम फुलेरा में ही नहीं रहोगे?

साहिल - नहीं यार । तुम अपना रिपोर्ट कार्ड दिखाना ।

बेला - ठीक है, तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड भी दिखाना । (दोनों एक दूसरे का रिपोर्ट कार्ड देखने लगते हैं ।)

साहिल - तुम्हारी आँखों से आँसू क्यों आ रहे हैं?

बेला - (हँसते हुए) मुझे क्या पता? अब तुम्हारी आँखें भी लाल हो गई हैं क्यों?

साहिल - मुझे भी नहीं पता ।

बेला - आज से मैं तुम्हें कैसे चिढाऊँ?

साहिल – तो क्या? हम छुट्टी के दिन फिर मिलेंगे ।

बेला - ठीक है, फिर मिलेंगे ।

साहिल - ठीक है बेला ।

(दोनों अलग-अलग रास्ते से चले जाते हैं ।)

SREENATH P, KOVOOR VARKALA, SCR145

10. रिज़ल्ट जानकर घर आने पर साहिल और माँ के बीच हुए वार्तालाप

माँ - क्या हुआ बेटा? बहुत परेशान दिखते हो।

साहिल - बेला आगे मेरे साथ नहीं होगी न?

माँ - नहीं बेटा। अगले साल वह राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी।

साहिल - मैं अजमेर में। ऐसा है न माँ?

माँ - हाँ बेटा। तुम्हारे पिता ने कहा था।

साहिल - बेला के बिना मैं कैसे रहूँ माँ?

माँ - बेटा, बेला जैसे दोस्त तुम्हें वहाँ भी मिलेगा।

साहिल - मुझे नहीं लगता। क्या बेला मुझे भूलेगा?

माँ - अच्छी दोस्ती कभी नहीं छूटेगा बेटा।

साहिल - ठीक है माँ।

11. फुलेरा गाँव में उच्च शिक्षा केलिए सुविधाएँ नहीं है। इस विषय के आधार पर समाचार तैयार करें।

फुलेरा गाँव में उच्च शिक्षा की सुविधाएँ नहीं

स्थान : ..... फुलेरा गाँव में उच्च शिक्षा केलिए सुविधाएँ नहीं है। यहाँ सिर्फ एक प्राईमरी स्कूल है। वहाँ पाँचवीं तक है। उच्च शिक्षा केलिए यहाँ के लोगों को दूसरे स्थानों पर जाना पडता है। यहाँ से दूसरे स्थान जाने केलिए गाडियों की सुविधाएँ भी नहीं हैं। फुलेरा के अधिक लोग किसान हैं। उनको अपने बच्चों को दूरी पर भेजने की संपत्ति भी नहीं है। यह बात शासकों को समझाई तो भी उनकी ओर से कोई कार्यवाई नहीं किया है। अब फुलेरा के लोग मुख्यमंत्री और शिक्षा मंत्री को निवेदन करने जा रहे हैं। लोगों का विश्वास है कि इस निवेदन से शासक लोग आवश्यक कार्यवाई लेंगे। ज़रूर यहाँ उच्च शिक्षा की आवश्यक सुविधाएँ देनी चाहिए।

12. साहिल की डायरी (रिज़ल्ट दिवस की)

तारीख : .....

आज स्कूल का मेरा अंतिम दिन था। कितनी जल्दी पिछले पाँच साल बीत गये। अब मैं छठी कक्षा मे आ गया हूँ। आज संतोष के साथ दुख भी है। बचपन के दोस्त बेला से बिछुडने की वेदना मन में दर्द पैदा किया। आज उसकी आँखों में पहली बार मैंने आँसू देखा। मेरी भी आँखें भर गई थीं। बेला के साथ की स्कूल शिक्षा मैं कभी नहीं भूलूँगा। वह बहुत प्यारी और दिली दोस्त थी। फुलेरा के स्कूल पाँचवीं तक होने के कारण पिताजी ने मुझे अजमेर भेजने का निर्णय लिया था। वह तो अगले साल राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी।

13. साहिल का पत्र – रिज़ल्ट के बाद

स्थान : .....

तारीख : .....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ।

आज पाँचवीं के रिज़ल्ट का दिन था। मैं और बेला हम दोनों पास हो गए। मैं बहुत खुश हूँ ... साथ-साथ दुखी भी। क्योंकि मैं कल से बेला से मिल नहीं पाएगा। अगले साल वह राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी। घरवाले मुझे अजमेर भेज देंगे। घर से दूर एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा। आज तक कितनी खुशी थी। बारिश के मौसम में बेला के साथ बीरबहूटियों को खोजकर कितने दिन बिताए। कल से किसके साथ लंगडी टाँग खेलूँ? क्या वह मुझे याद रखेगी? मेरा रिपोर्ट कार्ड देखते समय उसकी आँखों में आँसू आ गए। मेरा विश्वास है कि वह भी दुखी है। क्योंकि हमारी दोस्ती उतनी सख्त थी। नए स्कूल में मुझे मित्र ज़रूर मिलेंगे ... पर बेला जैसे कोई नहीं होगी।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे हो रही है? तुम कब यहाँ आओगे? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,

नाम

पता।

तुम्हारा मित्र

(हस्ताक्षर)

नाम

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCR145

14. बेला की डायरी (रिज़ल्ट दिवस की)

तारीख : ....

आज पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट का दिन था । मैं और साहिल पास हो गए । मैं बहुत खुश हूँ ... साथ–साथ दुखी भी । क्योंकि मैं कल से साहिल से मिल नहीं पाएगी । अगले साल वह अजमेर जाएगा । उसे घर से दूर एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा । आज तक कितनी खुशी थी । बारिश के मौसम में साहिल के साथ बीरबहूटियों को खोजकर कितने बिताए । कल से किसके साथ लंगडी टाँग खेलूँ? जाते समय उसकी आँखें लाल थीं और उसमें पानी भर गया था । मेरा विश्वास है कि वह भी दुखी है । क्योंकि हमारी दोस्ती उतनी सख्त थी ।

15. बेला का पत्र – रिज़ल्ट के बाद

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ ।

आज पाँचवीं के रिज़ल्ट का दिन था । मैं और साहिल हम दोनों पास हो गए । मैं बहुत खुश हूँ ... साथ-साथ दुखी भी । क्योंकि मैं कल से बेला से मिल नहीं पाएगी । अगले साल वह राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगा । घरवाले मुझे अजमेर भेज देंगे । घर से दूर एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा । आज तक कितनी खुशी थी । बारिश के मौसम में साहिल के साथ बीरबहूटियों को खोजकर कितने दिन बिताए । कल से किसके साथ लंगडी टाँग खेलूँ ? क्या वह मुझे याद रखेगी? मेरा रिपोर्ट कार्ड देखते समय उसकी आँखों में आँसू आ गए । मेरा विश्वास है कि वह भी दुखी है । क्योंकि हमारी दोस्ती उतनी सख्त थी । नए स्कूल में मुझे मित्र ज़रूर मिलेंगे ... पर बेला जैसे कोई नहीं होगी ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे हो रही है ? तुम कब यहाँ आओगी ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारी सहेली
(हस्ताक्षर)
नाम

PART 7 (रिपोर्ट कार्ड देखना)

1. ' बारिश से पहले की बारिश '- इसका क्या मतलब है?

बेला और साहिल के दुख भरे आँसू बरसात के समान बरस रहे हैं ।

2. यहाँ 'आखिरी बारी ' क्यों कहा गया है?

वे अलग-अलग स्कूलों में जा रहे थे ।

3. स्कूल के अंतिम दिन साहिल और बेला आपस में क्या देख रहे थे?

एक-दूसरे के रिपोर्ट कार्ड

4.बेला कहने लगी," मैं चिढाऊँ अब तुम्हें? रोनी सूरत साहिल रोनी सूरत साहिल ।"- इस प्रसंग में निहित बेला का भाव कौन-सा है?

प्यार

5. उनमें बारिश की बूँदों-सा पानी भर गया था । यहाँ ' उनमें ' किसकेलिए प्रयुक्त है?

साहिल की आँखों में

6. परीक्षा पास होने पर भी बेला और साहिल की आँखों से आँसू आये । क्यों?

साहिल और बेला पहली बार अलग-अलग स्कूलों में जाते हैं । यह सोचते समय दोनों की आँखों से आँसू आए ।

7. साहिल की आँखें लाल हो गईं । क्यों?

बेला और साहिल अगले वर्ष अलग-अलग स्कूलों में पढनेवाले हैं । वे यह सहन नहीं सकते थे । दोनों रोने लगे । इससे साहिल की आँखें लाल हो गईं ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA SORIS

8. बेला कहने लगी, “ मैं चिढाऊँ अब तुम्हें? रोनी सूरत साहिल रोनी सूरत साहिल ।“ - प्रस्तुत प्रसंग में बेला के कथन पर अपना विचार लिखें ।

जब पाँचवीं कक्षा की पढाई के बाद अलग-अलग स्कूल जाने की तैयारी करते हैं तो साहिल और बेला को यह बात असहनीय महसूस होती है । इस कारण से दुखी साहिल की आँखों में आँसू आ जाते हैं । तब उसे सांत्वना देते हुए बेला कहने लगती है कि साहिल की सूरत रोते समय बढती है ।

9. ‘ आज आखिरी बारी वे एक दूसरे की कोई चीज़ को छूकर देख रहे थे ।‘- इससे आपने क्या समझा?

पाँचवीं तक एक मन से हर काम लेनेवाले साहिल और बेला आगे की पढाई केलिए अलग अलग स्कूलों में भर्ती होनेवाले हैं, यानी वे बिछुड रहे हैं। इस कारण दोनों पहले की तरह कुछ कर न पाएँगे, मिल न पाएँगे। इसलिए ऐसा कहा होगा ।

10. ‘ यह बारिशों से पहले की बारिश का दिन था ।‘ कहानी के प्रसंग में यह कैसे सार्थक होता है?

हमेशा एकसाथ चलनेवाले साहिल और बेला आगे की पढाई केलिए अलग हो जानेवाले हैं। इस बिछुडन के बारे में आपस में बताकर दोनों दुखी हुए और उनकी आँखें भर गयीं। यह लेखक को बारिश से पहले की बारिश लगी ।

11. पटकथा (रिपोर्ट कार्ड देखने के बाद)

स्थान - स्कूल से घर जाने का रास्ता ।
समय - सुबह के 10 बजे ।
पात्र - 1. साहिल, करीब 11 साल का, कुर्ता और पतलून पहना है ।
2. बेला, करीब 11 साल की, फ्रॉक पहनी है ।
घटना का विवरण - साहिल और बेला दोनों किसी चिंता में मग्न है । वे आपस में बातें करने लगे ।

संवाद –

साहिल – तुम अपना रिपोर्ट कार्ड दिखाना ।
बेला - ठीक है, तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड भी दिखाना । (दोनों एक दूसरे का रिपोर्ट कार्ड देखने लगते हैं ।)
साहिल - तुम्हारी आँखों से आँसू क्यों आ रहे हैं?
बेला - (हँसते हुए) मुझे क्या पता? अब तुम्हारी आँखें भी लाल हो गई हैं क्यों?
साहिल - मुझे भी नहीं पता ।
बेला - आज से मैं तुम्हें कैसे चिढाऊँ?
साहिल – तो क्या? हम छुट्टी के दिन फिर मिलेंगे ।
बेला - ठीक है, फिर मिलेंगे ।
साहिल - ठीक है बेला ।
(दोनों अलग-अलग रास्ते से चले जाते हैं ।)

12. बेला का पत्र साहिल को (अजमेर के स्कूल के बारे में)

स्थान : ……………….
तारीख : ……………….

प्रिय साहिल,

तुम कैसे हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, तुम्हारे नए स्कूल के बारे में जानने और मेरे नए स्कूल के बारे में बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ।

अब तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? अजमेर का तुम्हारा नया स्कूल कैसा है ? वहाँ कोई नया दोस्त मिला है क्या ? हॉस्टल स्कूल के पास ही है न? तुम्हारा नया स्कूल फुलेरा का स्कूल जैसा है क्या? तुम्हें पुराने स्कूल की याद कभी आती है? अपने बारे में कहे तो मेरा नया स्कूल बहुत अच्छी है । वहाँ मुझे कई दोस्त मिले हैं । मुझे हमेशा तुम्हारी याद आती हैं । पहले की तरह हम कब खेत में बीरबहूटियों को खोजेंगे? तुम्हारे स्कूल के गणित के माटसाब सुरेंदरजी जैसा नहीं है न?

वहाँ की सारी बातें विशद रूप से ज़रूर लिखना । अ गली छुट्टी में हम मिलें । तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारी सहेली
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

13. साहिल का पत्र बेला को (नए स्कूल के बारे में)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय बेला,

तुम कैसी हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, मेरे नए स्कूल के बारे में बताने केलिए यह पत्र भेज रहा हूँ ।

परसों मैं इधर पहुँचा । यात्रा बहुत मुश्किल थी । गाडी में बडी भीड थी । कल यहाँ के स्कूल में मेरी भर्ती हुई । स्कूल होस्टल से आधा किलोमीटर दूर पर है । बडा स्कूल है । बडे बडे कमरे और मैदान । आँगन का बगीचा तरह तरह के फूलों से बहुत खूबसूरत है । कल सुबह स्कूल खुलेगा । होस्टल में पचास से अधिक छात्र हैं । कमरे में मेरा सहवासी है गणेश । वह आगरा से है । स्कूल जाने के लिए यहाँ से गाडी है । यहाँ की सडकें तो गाडियों से भरी हैं । कल शाम हम घूमने गए । इलाका बहुत सुंदर है । फुलेरा कितना छोटा है । यहाँ छोटी बडी दूकानें, बैंक, सिनेमाघर, मंदिर, मस्जिद सब कुछ हैं । यहाँ के लोग सदा व्यस्त हैं ।
आच्छा, वहाँ कैसे चल रहा है? सब ठीक हैं न? नया स्कूल कैसा है? कल रात में भी मैंने बीरबहूटियों को खोजने का सपना देखा । वहाँ की सारी बातें विशद रूप से लिखना । अगली छुट्टी में हम मिलें । तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

14. वार्तालाप – साहिल और बेला (बिछुडन के कुछ दिन के बाद मिलने पर)

बेला - अरे साहिल, कैसे हो तुम? नया स्कूल कैसा है?

साहिल - ठीक हूँ । स्कूल भी अच्छा है, लेकिन मैं वहाँ अकेला हूँ ।

बेला - कोई दोस्त नहीं?

साहिल - दोस्त अनेक हैं, लेकिन तेरे जैसे कोई नहीं ।

बेला - मेरी हालत भी तेरी जैसी है । तेरे जैसे दोस्त मुझे भी नहीं ।

साहिल - क्या करें हम?

बेला - पता नहीं । लेकिन खुशी की एक बात है । सुरेंदर जी जैसे माटसाब वहाँ नहीं ।

साहिल - तेरी आँखों में आँसू क्यों बेला?

बेला - पता नहीं । और तेरी आँख में ...?

साहिल - मुझे भी पता नहीं । हम दोनों समान दुखी हैं ।

15. बेला की डायरी (राजकीय कन्या स्कूल के पहले दिवस की)

तारीख : ....

मैं बहुत उदास हूँ । आज साहिल के बिना स्कूल का पहला दिवस है । आज से हम अलग - अलग स्कूल में हैं । स्कूल में नए दोस्तों को मिला । लेकिन साहिल के सामने ये कहाँ ? साहिल ही मेरा सच्चा दोस्त है । मैं सदा हमारी दोस्ती के बारे में सोचती हूँ । मैं फिर कब साहिल से मिलूँगी ? हम कब बीरबहूटियों को ढूँढेंगे ? हम कब एक-साथ खेलेंगे ? इन विचारों से पढने को भी मन नहीं लगता है । सुरेंदर जी हमें पीट लेते तो भी कोई परवाह नहीं था । आज ही साहिल को एक पत्र लिखना है । साहिल भी वहाँ दुखी होगा । मेरा पत्र उसको आश्वासन देगा । मैं अगली छुट्टियों की प्रतीक्षा में हूँ ।

16. साहिल की डायरी (अजमेर के स्कूल के पहले दिवस की)

तारीख : ....

मैं बहुत उदास हूँ । आज बेला के बिना स्कूल का पहला दिवस है । आज से हम अलग-अलग स्कूल में हैं । कल मैं अजमेर के हॉस्टल में आया । हॉस्टल में और स्कूल में नए दोस्तों को मिला । लेकिन बेला के सामने ये कहाँ? बेला ही मेरा सच्चा दोस्त है । मैं सदा हमारी दोस्ती के बारे में सोचता हूँ । मैं फिर कब बेला से मिलूँगा ? हम कब बीरबहूटियों को ढूँढेंगे? हम कब एक - साथ खेलेंगे? इन विचारों से पढने को भी मन नहीं लगता है । सुरेंदर जी हमें पीट लेते तो भी कोई परवाह नहीं था । आज ही बेला को एक पत्र लिखना है । बेला भी वहाँ दुखी होगी । मेरा पत्र उसको आश्वासन देगा । मैं अगली छुट्टियों की प्रतीक्षा में हूँ ।

SREENITH R, KOVOOR VARKALA, SCRIBS